रात्रीक्लास ओमशांति 7.1.67

सतयुग में सदैव बहारी मौसम होती है।वहां .....होता ही नहीं।बहुत थोड़े होते हैं ना।तो नदियों के किनारों पर मकान होते हैं।गर्मी होती ही नहीं जो कि पहाड़ों पर जाना पड़े।यही दिलवाला मंदिर पूरा 5परसेंट यादगार.....वंडर है ना।आगे कब आबू में बाबा नहीं आया।अभी ऐसी जगह आये हैं जहां हमारा पूरा यादगार है।मनुष्य समझते हैं स्वर्ग कोई उपर में है।दिलवाला में भी देवताओं की राजधानी उपर छत में बना दी है।वहां फिर यह मंदिर ,भक्ति आदि कुछ भी नहीं रहेगी।जो भी त्योहार हैं सब इसी समय के यादगार हैं।सब सीताओं को ,भक्तों को रावण की जेल से मुक्त करते हैं।सारी दुनियां को ही रावण राज्य से लिबरेट किया जाता हैं।रक्षाबंधन आदि सब अभी के हैं।दीवाली ओर होली, ज्ञान और विज्ञान।विज्ञान माना योग।ज्ञान माना स्वदर्शन चक्रधारी बनना।इस समय का ही यादगार भक्तिमार्ग में चला है।तुमको अब ज्ञान मिल रहा है।पुरुषार्थ कर फिर राजराजेश्वर बनेंगे।यह राजयोग है ना।बाप राजाओं का राजा बनाते हैं।वो ही देवतायें फिर पतित राजायें भी बनते हैं।यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं।रावण राज्य में राजाई मिलती है धन दान करने से।भारत जैसा दानी कोई होता नहीं है।तुम सब कुछ बाप को दान करते हो।बाप क्या करेंगे?फुरी2 तालाब हो जाता है।राजधानी स्थापन हो रही है।साहुकारों का बाबा स्वीकार नहीं करेंगे।हम लेकर क्या करेंगे?जाकर सेंटर खोलो।करोड़पति 10लाख देते हैं।100 वाले एक रुपया देते हैं।वो इक्वल होता है।इनका नाम ही है गरीब निवाज।वो है झूठी कमाई।यह है सच्ची कमाई।यह ही साथ चलने वाली है।बाबा ने शुरू में विनाश सा. भी किया था, राजाई सा. भी किया।बाप की प्रवेशता थी तो सब कुछ इन माताओं को दे दिया।माताओं को ट्रस्टी बना दिया।फिर बच्चे कहने लगे हमको रुपये दो।हम पवित्र नहीं रहेंगे।स्त्री ने कहा हम पवित्र रहेंगी।तो उनको कहा जहां चाहो चले जाओ।हम तो सब कुछ दे चुके हैं।ईश्वरीय कार्य में लगाकर फिर आसुरी कार्य में नहीं लगा सकते हैं।तो यह सब ड्रामा में नूंध है।जो कुछ ड्रामा में हो चुका है सो फिर रिपीट जरूर होगा।इसको कहा जाता है अनादि अविनाशी ड्रामा।इनका राइट हैंड है धर्मराज।कुछ भी अवज्ञा करे तो बड़ा दण्ड मिलेगा।इसलिए कोई अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।सतगुरू का निंदक ठौर ना पावे।ठौर तो बाप देते है।उन गुरुओं ने फिर अपने लिए कह दी है।कह देते गुरू .....ठौर नहीं।गुरू तो बहुत हैं।रास्ता बताने वाले तो एक ही सत बाप ,सत टीचर, सतगुरू है।मनुष्य कब रास्ता बता नहीं सकते।सद्गति कर नहीं सकते।मनुष्य कब रास्ता बता नहीं सकते।रचना को रचना से वर्सा नहीं मिलता।बाप ही बच्चों को वर्सा देते हैं।यह है बेहद का बाप।यह है प्रवृत्ति मार्ग।सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग।उनको है हद का सन्यास।हमारा है बेहद का सन्यास।हम नंगे आये तो फिर नंगे जाना है;परंतु पावन जरूर बनना है।ओमशांति।